बिहार में उच्च शिक्षा की स्थिति

अजीत कुमार

बिहार राज्य के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में लगातार हो रहे गुणात्मक ह्रास, विश्वविद्यालय की बिगड़ती हुई प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं वित्तीय स्थिति विस्मयकारी है। राज्य के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में 1996 से लगातार आठ हजार से अधिक व्याख्याता, उप–प्राचार्य (रीडर) विश्वविद्यालय आचार्य एवं प्राचार्यों के पद रिक्त हैं। कालबद्ध प्रोन्नति और मेधा आधारित प्रोन्नति 1996 से बंद है। वरीय और योग्य शिक्षकों में असंतोष व्याप्त है। रिक्त पदों पर नियुक्ति नहीं होने के कारण महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य, शोध कार्य पूर्ण रूप से बाधित है। शिक्षकों के अभाव में नियमित शिक्षण नहीं हो पा रहा है जिसके फलस्वरूप विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति लगातार नगण्य होती जा रही है। हाल में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार भी स्थिति निम्नवत है– बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा शिक्षक रहित विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की आयोजित परीक्षाओं के परिणाम अप्रत्याशित नहीं है। प्राथमिक से महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तक लगभग पॉख लाख शिक्षकों के पद रिक्त है। नियोजन एवं नियुक्ति की अव्यावहारिक, अवैज्ञानिक एवं शिक्षा, शिक्षक शिक्षार्थी विरोधी प्रक्रियाओं के कारण पूरे राज्य का शिक्षा जगत और भी भयंकर दुष्परिणामों को भोगने के लिए अभिशप्त है।